सामाजिक समूह के प्रकार
(Types of social Group)

सामाजिक समूह के प्रकारों के सन्दर्भ में समाजशास्त्रियों में एक मत नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न आधारों पर इसके प्रकारों को स्पष्ट किया है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण प्रकार निम्नलिखित है!—

(1) प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह (Primary Group and secondary Group)

कूले ने सर्वप्रथम 1909 में प्राथमिक समूह की अवधारणा का उल्लेख किया है। जिस समूह में आमने-सामने का घनिष्ठ संबंध, हम की भावना एवं व्यक्तिगत सहयोग अधिक पाया जाए, उसे प्राथमिक समूह कहा जाता है। इसके प्रमुख उदाहरण परिवार, क्रीड़ा समूह एवं पड़ोस कहे जाते है।

इसके विपरीत जिस समूह में प्राथमिक समूह से भिन्न विशेषताएँ पायी जाती है उसे द्वितीयक समूह कहते है। यानि ऐसे समूह के सदस्यों में मैं की भावना की प्रधानता, समझौतापूर्ण संबंध एवं भावात्मक संबंधों की कमी होती है। ये सिर्फ अपने हितों की पूर्ती से संबंधित होते है। इसके प्रमुख उदाहरण राजनीतिक दल, विभिन्न संघ, क्लब आदि होते है।

(2) अन्तः समूह और बाह्य समूह (In Group and out Group) :—

सामाजिक समूह का यह वर्गीकरण आपसी घनिष्ठता एवं सामाजिक दूरी पर आधारित है। समनर ने सर्वप्रथम अन्तः समूह की अवधारणा का उल्लेख किया है। जिस समूह के साथ अपनत्व की भावना अधिक हो, जिसे

व्यक्ति अपना मानता है, उसे अन्तः समूह कहा जाता है। जैसे - हमारा परिवार, हमारा कॉलेज, हमारा राष्ट्र आदि।

इसके विपरित बाह्य समूह में व्यक्तियों के बीच दुराव एवं उदासीनता की भावना होती है तथा कभी-कभी घृणा व शत्रुता की, तो उसे बाह्य समूह कहा जाता है। जैसे - दूसरा कॉलेज, दूसरा राष्ट्र, दूसरी जाति आदि बाह्य समूह कहलाते है।

③ उदग्र समूह और समतल समूह (Vertical Group and Horizontal Group) :

मिलर ने सामाजिक समूह के दूरी व समानता के आधार पर उदग्र और समतल समूहों की चर्चा की। जब कोई समूह विभिन्न खण्डो में विभाजित हो और उन खण्डो मे ऊँच - नीच का स्तरीकरण हो, तो उसे उदग्र समूह कहा जाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण जाति है। जाति अनेक खण्डों मे विभाजित है और इन खण्डों मे ऊँच - नीच का उतार-चढ़ाव है। सबसे ऊपर ब्राह्मण है और सबसे नीचे शुद्र है। बीच मे अनेक जातियाँ है।

जिस समूह के सदस्यों की स्थिति लगभग समान है उसे समतल समूह कहते है या क्षैतिज समूह कहते है। जैसे - श्रमिक वर्ग, किरानी वर्ग, लेखक वर्ग आदि। ऐसे समूहों में प्रायः सभी सदस्यों की हैसियत, प्रतिष्ठा, सामाजिक - आर्थिक स्थिति आदि एक समान होती है। इस तरह, समतल समूह सामाजिक समानता को प्रदर्शित करता है।

(4) मैकाइवर एवं पेज ने हितों की प्रकृति एवं संगठन की मात्रा के आधार पर समूह के तीन मुख्य प्रकारों की चर्चा की है जो निम्नलिखित है :—

(i) क्षेत्रीय समूह (Territorial Unities) :—
जिन समूहों में सदस्यों के हित व्यापक होते है तथा जो एक निश्चित क्षेत्र के अन्दर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते है, उसे क्षेत्रीय समूह कहा जाता है। इसके प्रमुख उदाहरण समुदाय है। साथ ही जनजाति, गाँव, नगर, राज्य आदि भी है।

(ii) हितों के प्रति जागरूक समूह जिनका कोई निश्चित संगठन नहीं (Interest Conscious Units without Definite organization) :—
ये वे समूह है जो अपने हितों के प्रति जागरूक होते है पर इनके संगठन उतने निश्चित नहीं होते। इसके निर्माण का कारण यह है कि ऐसे समूहों के सदस्यों के दृष्टिकोण मे समानता होती है। उदाहरणस्वरूप :— सामाजिक वर्ग, राष्ट्रीय समूह, प्रजाति समूह, प्रवासी समूह जाति समूह, भीड़ आदि।

(iii) हितों के प्रति जागरूक समूह जिनका निश्चित संगठन (Interest Conscious Units with Definite organization) :—
ये वे समूह है जो अपने हितों के प्रति जागरूक होते है और साथ ही इनके संगठन निश्चित होते है। इसमे कुछ समूहों का आकार छोटा है। इसलिए सदस्यों के बीच घनिष्ठ संबंध तथा आमने-सामने का व्यक्तिगत संबंध होता है। जैसे-परिवार, क्रीड़ा-समूह। इनमे कुछ समूहों का आकार बड़ा

होता है तथा इसका संगठन एक निश्चित उद्देश्य - पूर्ती के सन्दर्भ में होता है। जैसे- राज्य, मजदूर संघ आदि।

(5) गिलिन्स ने सामाजिक प्रकार्यों के आधार पर समूहों के 6 प्रकार बताए हैं जो निम्नलिखित हैं:-

(i) परिवार समूह (Family Group)
(ii) शैक्षणिक समूह (Educational Group)
(iii) आर्थिक समूह (Economic Group)
(iv) राजनीतिक समूह (Political Group)
(v) धार्मिक समूह (Religious Group)
(vi) मनोरंजन समूह (Recreational Group)

इसके अतिरिक्त समूहों के कुछ अन्य वर्गीकरण की चर्चा होती है - वृहद समूह एवं लघु समूह, स्वतन्त्र समूह एवं निर्भर समूह, दीर्घायु समूह एवं अल्पायु समूह, अनिवार्य समूह एवं ऐच्छिक समूह, खुला समूह एवं बन्द समूह आदि - आदि।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने ढंग से सामाजिक समूह को स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों की व्याख्या की है। उदाहरणस्वरूप-(1) कूले के अनुसार प्राथमिक समूह एवं द्वितीयक समूह, (2) समनर के अनुसार अन्तः समूह एवं बाह्य समूह, (3) मिलर के अनुसार उदग्र समूह और समतल समूह, (4) मैकाइवर एवं पेज के अनुसार (i) क्षेत्रीय समूह, (ii) हितों के प्रति जागरूक समूह जिनका कोई निश्चित संगठन नहीं, (iii) हितों के प्रति जागरूक समूह जिनका निश्चित संगठन इत्यादि।